Indian Veterinary Magazine
a monthly Magazine
of the people, by the people, for the people

Vol 1 Issue 1, June 2025, 7-9

ई-लर्निंग के युग में शैक्षणिक पुस्तकालयों की बदलती भूमिका

जे. सत्य, स्नातकोत्तर शोधार्थी
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
अलागप्पा विश्वविद्यालय, कराईकुडी, तमिलनाडु, भारत

परिचय

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों (ICTs) के तीव्र विकास ने वैश्विक स्तर पर उच्च शिक्षा के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है। जहाँ एक समय शैक्षणिक पुस्तकालयों को केवल मुद्रित संसाधनों के संरक्षक के रूप में देखा जाता था, वहीं आज वे डिजिटल शिक्षण संरचनाओं का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म के प्रसार ने पुस्तकालयों को केवल संसाधन प्रदान करने की भूमिका से आगे बढ़ाकर आभासी शिक्षण सहयोगी के रूप में परिवर्तित कर दिया है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान, जब शिक्षण संस्थानों को ऑनलाइन पद्धति अपनानी पड़ी, पुस्तकालयों की भूमिका केवल भौतिक संग्रह तक सीमित न रहकर **ज्ञान के ऑनलाइन प्रवेशद्वार** के रूप में स्पष्ट रूप से सामने आई।

पारंपरिक से डिजिटल शिक्षण सहयोग तक

लंबे समय तक पुस्तकालयों की पहचान अध्ययन कक्षों, मुद्रित संग्रहों और प्रत्यक्ष सेवाओं से जुड़ी रही। संसाधनों की उपलब्धता हेतु विद्यार्थियों को भौतिक रूप से पुस्तकालय आना पड़ता था और संदर्भ सेवाएँ आमने-सामने तक सीमित थीं। डिजिटल शिक्षण की उभरती प्रवृत्ति ने पुस्तकालयों को सेवा मॉडल को पुनर्परिभाषित करने के लिए प्रेरित किया। आज के शिक्षार्थी **24/7 निरंतर पहुँच** की अपेक्षा करते हैं—चाहे वह ई-पुस्तकें हों, ई-जर्नल्स, डेटाबेस या मल्टीमीडिया सामग्री। इसी कारण पुस्तकालय अब **शिक्षण और अधिगम के साझेदार** बनते हुए डिजिटल सामग्री को पाठ्यक्रम में सक्रिय रूप से समाहित कर रहे हैं तथा लचीले और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण वातावरण का समर्थन कर रहे हैं।

पुस्तकालय सेवाओं में प्रौद्योगिकी का एकीकरण

आईसीटी (ICT) ने पुस्तकालयों की सेवाओं में कई नवाचार जोड़े हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **संस्थागत रिपॉज़िटरी:** अनेक पुस्तकालयों ने शोध प्रबंध, थीसिस और प्रकाशनों को संग्रहित करने के लिए डिजिटल रिपॉज़िटरी विकसित किए हैं। ये न केवल शोध की दृश्यता बढ़ाते हैं बल्कि मुक्त पहुँच (Open Access) को भी प्रोत्साहित करते हैं।

- **लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) एकीकरण:** Moodle या Blackboard जैसे प्लेटफ़ॉर्म से जुड़कर पुस्तकालय यह सुनिश्चित करते हैं कि पाठ्यक्रम-विशिष्ट संसाधन और अध्ययन मार्गदर्शिकाएँ शिक्षण वातावरण में सीधे उपलब्ध हों।
- **डिजिटल संदर्भ सेवाएँ:** पारंपरिक संदर्भ डेस्क का स्थान अब चैट, ईमेल और वीडियो परामर्श जैसी ऑनलाइन सेवाओं ने ले लिया है, जिससे कहीं से भी वास्तविक समय में सहायता प्राप्त की जा सकती है।
- **ई-रिज़र्व और मल्टीमीडिया सामग्री:** पुस्तकालय स्कैन की गई पठन सामग्री, डिजिटल पाठ्यपुस्तकें और स्ट्रीमिंग मीडिया उपलब्ध कराते हैं, जिससे शिक्षक विविधतापूर्ण ऑनलाइन पाठ्यक्रम तैयार कर पाते हैं।
- **सूचना साक्षरता प्रशिक्षण:** संग्रह के परे, पुस्तकालय अब वेबिनार, ऑनलाइन ट्यूटोरियल और कार्यशालाओं के माध्यम से शोध कौशल, संदर्भ प्रबंधन और सूचना मूल्यांकन सिखा रहे हैं। इस प्रकार पुस्तकालयाध्यक्ष डिजिटल शिक्षकों की भूमिका निभा रहे हैं।
- **डेटा और शोध सहयोग:** आज पुस्तकालय अनुसंधान डेटा प्रबंधन, बिब्लियोमेट्रिक विश्लेषण और डिजिटल स्कॉलरशिप में सहयोग देकर केवल संग्रह प्रबंधन से आगे बढ़कर शोध साझेदार बन रहे हैं।

ई-लर्निंग सहयोगी के रूप में पुस्तकालयाध्यक्ष

पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका सूचना संरक्षक से आगे बढ़कर अब ई-लर्निंग सहयोगी तक पहुँच चुकी है। वे सक्रिय रूप से शामिल हैं—

- विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए सूचना साक्षरता मॉड्यूल तैयार करने में।
- उपयोगकर्ताओं को डिजिटल डेटाबेस, संदर्भ उपकरणों और प्लेज़रिज़्म डिटेक्शन सॉफ़्टवेयर के उपयोग में प्रशिक्षित करने में।
- संकाय सदस्यों के साथ मिलकर ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री का चयन करने और कॉपीराइट अनुपालन सुनिश्चित करने में।
- MOOCs और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को डिजिटल सामग्री से समर्थन देने में।

शैक्षणिक पुस्तकालयों के समक्ष चुनौतियाँ

यद्यपि पुस्तकालयों ने ई-लर्निंग में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- **डिजिटल विभाजन:** सभी छात्रों को उच्च गति इंटरनेट और उपकरणों की समान पहुँच उपलब्ध नहीं है।

- **बजट सीमाएँ:** ई-जर्नल्स और डेटाबेस की सदस्यता लागत काफी अधिक है।
- **कॉपीराइट और लाइसेंसिंग मुद्दे:** विभिन्न क्षेत्रों में ई-संसाधनों के उपयोग पर प्रतिबंध।
- **कौशल अंतराल:** पुस्तकालयाध्यक्षों को डिजिटल दक्षताओं में निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता।

निष्कर्ष

ई-लर्निंग के युग ने शैक्षणिक पुस्तकालयों को भौतिक संग्रह केंद्रों से **डिजिटल शिक्षण केंद्रों** में बदल दिया है। प्रौद्योगिकी का उपयोग, सूचना साक्षरता प्रशिक्षण और शिक्षकों के साथ सहयोग के माध्यम से पुस्तकालय अकादमिक सफलता के लिए केंद्रीय बने हुए हैं। आगे बढ़ते हुए, पुस्तकालयों को आजीवन अधिगम (Lifelong Learning) के समर्थक के रूप में अपनी भूमिका को और मजबूत करना होगा, ताकि वे डिजिटल दुनिया में **समान और न्यायसंगत ज्ञान तक पहुँच** सुनिश्चित कर सकें।